

कबीर के दोहे

साहिब तेरी साहिबी, सब घट रही समाय ।
ज्यों मेहंदी के पात में, लाली लखी न जाय ॥



जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ ।
मैं बौरी खोजन चली, गई किनारे बैठ ॥



गुणवन्त और द्रव्य सौ, प्रीति करें सब कोय ।
कबिरा प्रीति वो जानिए, जो इनसे न्यारी होय ॥



श्वास श्वास पै नाम ले, वृथा श्वास मत खोय ।
ना जाने उस श्वास का, आवन होय न होय ॥



कबीर

लोभ सरस अबगुण नहीं, तप नहीं सत्य समान ।
तीरथ नहीं मन शुद्धि सम, विद्या सम धनवान् ॥



घी के तो दर्शन भले, खाना भला न तेल ।
दाना तो दुश्मन भला, मूरख का क्या मेल ॥



कविरा नन्हे हैं रहो, जैसी नन्ही दूब ।
सभी घास जल जायेंगे, दूब खूब की खूब ॥



कागा काको धन हरे, कोयल काको देत ।
मीठे शब्द सुनाय के, जग अपनो कर लेत ॥



माया मरी न मन मरे, मर-मर गये शरीर ।
आशा तृष्णा ना मरी, कह गये दास कबीर ॥

काषा ८
साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुहाय ।
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय ॥



काया काठी काल घुन, जतन जतन सा खाय ।
काया मध्ये ईश बस, मर्म न काहू पाय ॥



सुमरत सुरत लगाय कर, मुख से कछु ना बोल ।
बाहर का पट देय कर, अन्दर का पट खोल ॥



सुमरन से मन लाइये, जैसे कामी काम ।
एक पलक विसरे नहीं, निसि दिन आठों याम ॥



दुख में सुमिरन अब करें, सुख में करेन कोय ।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय ॥

कबीर

गंगा तीर जो घर करै, पीवे निर्मल नीर ।
बिन हरि सुभिरन मुवित ना, कह गये दास कबीर ॥



जा कारण जग ढूँढ़िया, सो तो हिरदय मांहि ।
पदा किया भरम का, तोहे सूझे नाहिं ॥



जो मतवारे राम के, लगन हुए मन मांह ।
ज्यों दर्पण की सुन्दरी, किनहूं पकड़ा नाह ॥



कथा कीर्तन करन को, जाकी निश दिन रीत ।
कहें कबीर या दास से, निश दिन कीजे प्रीत ॥



राजा रानी रंक सब, बड़ा जो सुमरे नाम ।
कह कबीर बन्दा बड़ा, जो सुमरे निष्काम ॥

कबीर

नहाये धोये क्या हुआ, जो मन में मैल समाय ।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय ॥



सबते सांचा है भला, जो दिल सांचा होय ।
सांच बिना ना सुख कोई, चाहे कथे जु कोय ॥



कबिरा सोता क्या करे, जागो जपो मुरार ।
एक दिना है सोवना, लांबे पांव पसार ॥



माला फेरत जुग भया, मिटा न मन का फेर ।
कर का मनका छोड़ के, मन का मन का फेर ॥



बूंद पड़ी जो समुद्र में, तेहि जाने सब कोय ।
समुद्र समाना बूंद में, विरला बूझे कोय ॥

कबीर

जाना नहीं बूझा नहीं, समझ गया नहीं गौन ।
अन्धे को अन्धा मिला, राह बतावे कौन ॥



कोटि कोटि तीर्थ करे, कोटि कोटि रहे धाम ।
जब लग साधन में नहीं, तब लग काचा काम ॥



वस्तु केहि ढूँढ़त कहीं, केहि विधि आवे हाथ ।
कहै कबीर तब पाइये, जब भेदी लीजे साथ ॥



बोली तो अनमोल है, जो कोई जाने बोल ।
हृदय तराजू तोल कर, तब मुख डाहर खोल ॥



ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय ।
औरों को शीतल करे, आपौ शीतल होय ॥

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर,
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ॥



कबिरा सब जग निर्धना, धनवन्ता नहिं कोय ।
धनवन्ता सोई जानिए, जाके राम नाम धन होय ॥



जहां दया तहां धर्म है, जहां लोभ तहां पाप ।
जहां क्रोध तहां काल है, जहां छिमा तहां आप ॥



दुर्लभ मानुष जन्म है, होय न दूजी बार ।
पक्का फल जो गिर पड़ा, लगे न दूजी बार ॥



बाजीगर का बांदरा, जीवा मन के साथ ।
नाना नाच दिखाय कर, राखे अपने हाथ ॥

कवीर

साधु भये तो क्या भये, जो नहिं बोल विचार ।
हने पराई आत्मा, जीभ लिये तलवार ॥



कहता हूं कह जात हूं, कहा जु मान हमार ।
जाको गल तुम काटिहो, वोही काट तुम्हार ॥



अवगुन कहूं शराब का, आपा अहमक होय ।
मानुष से पशुआ करे, दाम गांठ से खोय ॥



खट्टा मीठा चिड़चिड़ा, जीभा सब रस लेय ।
चोर औं' कुत्ता मिल गया, पहरा किसका देय ॥



साँई आगे सांच है, साँई सांच सुहाय ।
चाहे लाम्बे केश कर, चाहे घोट मुँडाय ॥

कबीर

सोता साधु जगाइए, करे नाम का जाप ।
यह तीनों सोते भले, साकत, सिंह औ' सांप ॥



लीक पुरानी ना तजें, कायर कुटिल कपूत ।
लीक पुरानी न रहें, शायर सिंह सपूत ॥



खेत न छोड़े शूरमा, जूझे दो दल मांह ।
आशा जीवन औ' मरन, मन में राखे नांह ॥



वैद्य मुवा रोगी मुवा, मुवा सकल संसार ।
एक कबीरा ना मुवा, जाके राम अधार ॥



साँई से सब होत है बन्दे से कुछ नाय ।
राई से पर्वत करे, पर्वत राई मांह ॥

कवीर

कांचे भाँडे से रहे, ज्यों कुम्हार का नेह ।
भीतर से रक्षा करे, बाहर चोटें देह ॥

○

प्रेम भाव इक चाहिए, भेष अनेक बनाय ।
चाहे घर में बास कर, चाहे बन को जाय ॥

○

प्रेम प्रेम सब कोई कहे, प्रेम न जाने कोय ।
आठ पहर बहता रहा, प्रेम कहावे सोय ॥

○

माया तो ठगनी बनी, ठगत फिरे सब देश ।
जा ठग ने ठगनी ठगी, सो ठग को आदेश ॥

○

ज्यों नैनों में पूतली, त्यों मालिक घट मांय ।
मूर्ख लोग न जानिए, बाहर ढूँढ़न जांय ॥

कबीर

मांगन मरन समान है, मत कोई मांगो भीख ,
मांगन से मरना भला, यह सतगुरु की सीख ॥



पतिवरता मैली भली, कजली कुचिल कुरुप ।
पतिवरता के रूप पर, वारूं कोटि सरूप ॥



कबिरा जपनी काठ की, क्या दिखलावे तोय ।
हृदय नाम ना जापिया, यह अहनी क्या होय ।



माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख मांह ।
मनुवा तो दश दिशि फिरे, यह तो सुमरण नांय ॥



तरवर सरवर सन्त जन, चौथे बरसे मेह ॥
परमारथ के कारणे, चारों धारें देह ॥

कबीर

घटे बढ़े छिन एक में, सो तो प्रेम न होय ।
अघट प्रेम पिजर बसे, प्रेम कहावे सोय ॥

○

मोर तोर की जेवरी, बंट बांधा संसार ।
दास कबीरा क्यों बंधे, जाके नाम अधार ॥

○

लेने को सत नाम है, देने को अन्त दान ।
तिरने को है दीनता, डूबन को अभिमान ॥

○

पानी ऐसा बुलबुला, अस मानस की जात ।
देखत ही छुप जायेगे, ज्यों तारा परभात ॥

○

सांचा सौदा कीजिये, अपने दिउ में जान ।
सांचा हीरा पाइये, झूठे मारे हान ॥

बीर

जेहि मारग गये पण्डिता, तेहि गये बहु तीर ।
ऊंची घाटी राम की, तेहि चढ़ रहे कबीर ॥



गार'-अंगार क्रोध-जल, निदिया-धूआं होय ।
इन तीनों को परहरै, साधु कहावे सोय ॥



आवत गाली एक है, उलटे होत अनेक ।
कहै कबीर मत उलटिये, वही एक की एक ॥



एक कहुं तो हैं नहीं, दूजा कहुं तो गार ।
है जैसा तैसा रहे, कहै कबीर विचार ॥



जो जानो जिव आपना, करिहो जीव को सार ।
जीव ऐसा पाहुना, मिले न दूजी बार ॥

गही टेक छोड़े नहीं, जीभ चौंच जरि जाय ।
मीठा कहा अंगार में, जाय चकोर चबाय ॥



मलय गिर के बास में, वृक्ष रहा सब कोय ।
कहिये जो चन्दन भया, मलयागिर ना होय ॥



सुतर्क वचन माने नहीं, आप न करे विचार ।
कहै कवीर पुकार के, सपने गया संसार ॥



जाके जिम्मा बंधन नहीं, हृदय नाहीं सांच ।
वाके संग न लागिये, खाले बटिया कांच ॥



अटकी भाल शरीर में, तीर रहा है टूट ।
चुम्बक बिन निकले नहीं, कोटि पट्टन को फूट ॥

सनशे सब जग खन्दिया, खन्द खन्द न कोय ।
सनशे जो खन्द सोई जना, शब्द बोए की होय ॥



ज्ञान रतन का जतन कर, माटी का संसार ।
आया कबिरा फिर गया, फीका है संसार ॥



बलिहारी तेहि चित्त की, परचित परखन हार ।
साँई दीनहु खांड को, खारी बोझ गंवार ॥



मन मतंग माने नहीं, चले सुरत के साथ ।
दीन महावत क्या करे, अंकुश नाहीं हाथ ॥



साहू ते भये चोरवा, चोरन ते भये जुझ़ ।
तब जानेगा जोगिया, मार रहेगो तुझ़ ॥



हृदय भीतर आरसी, मुख देखा नहीं जाय ।
मुख भी जबही देखिये, जब दिल की दुविधा जाय ॥



गृह तज के भए तपस्वी, नव खंड तप को जाय ।
चोली तकी भारिया, विरहन चुन-चुन खाय ॥



आपा तजो हरि भजो, नख सिख तजो विकार ।
सब जीव ते निरभी रहा, साधु मता है सार ॥



हीरा तहां न खोलिए, जहां कूंजड़ा हाट ।
बांधो चुपकी पोटरी, लागहु अपनी बाट ॥



अपने अपने सीख की, सब ही लीन्हों मान ।
हरि की बात न दुरतरी, पूरी काहु न जान ॥

मूरख से क्या कहिये, सूम से क्या कहाय ।
पाहन में क्या मारिये, चोखो तीर नसाय ॥



कितनों मनाऊं पांव परि, कितनों मनाऊं रोय ।
हिन्दू पूजे देवता, तुर्क न काहू कोय ॥



कुटिल वचन सबसे बुरा, जारि करे तन छार ।
साधु वचन जल रूप है, बरसे अमृत धार ॥



विरचा फले न आपको, नदी न पीवे नीर ।
पर स्वारथ के कारने, सन्तन धरा सरीर ॥



एक नाम को जानकर, दूजा दिया भुलाय ।
तीरथ ब्रत जप तप नहीं, सदगुरु चरन समाय ॥

जो यह एक जानिया, तो जाना सब जान ।
जो यह एक न जानिया, तो सब ही ना जान ॥



सिख तो ऐसा चाहिये, गुरु को सरबस देय ।
गुरु तो चाहिये सिख का, जो कुछ भी ना लेय ॥



करता था सो क्यों किया अब कर क्यों पछताय ।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहां से खाय ॥



ज्यों लगि दिल पर दिल नहीं, त्यों लगि सुखहू नांह ।
चारों युगन् पुकारिया, सो संसे दिल मांह ॥



कबिरा भक्ति बगरिया, कंकर पत्थर होय ।
अंतर में विष राख के, अमृत डारन खोय ॥

कबीर

सुमरण से मन लाइये, जैसे पानी मीन ।
प्राण तजे छिन बीछड़े, सन्त कबीर कह दीन ॥



आग लगी जो समुद्र में, धुआं प्रकट न होय ।
सो जाने जो जरमुआ, जाको लागी होय ॥



कहते तो बहुते मिले, गहता मिला ना कोय ।
सो कहता वह जान दे, जो नहीं गहता होय ॥



तब लग तारा जगमगे, जब लग उगे न सूर ।
त्यों लग जीव जग कर्मवश, ज्यों लग ज्ञान न पूर ॥



सोना, सज्जन, साधु जन, टूट जुड़े सौ बार ।
दुर्जन कुम्भ कुम्हार को, एके धक्क दरार ॥



कबीर

दस द्वारे का पींजरा, तामें पंक्षी पौन ।
रहे अचरज होत है, गये अचम्भा कौन ॥



बानी से पहचानिये, साहू चोर की बात ।
अन्दर की करनी सबै, निकले मुंह की बात ॥



दिल का मरहम ना मिला, जो मिला सो गर्जी ।
कह कबीर आसमान फटा, क्यों कर सीवे दर्जी ॥



तिनके कबहूं न निदिये, पांव तले जो होय ।
कबहूं उड़ आंखों पड़े, पीड़ घनेरी होय ॥



फूटी आंख विवेक की लखे न सन्त असन्त ।
जाके संग दस बीस हैं, ताको नाम महन्त ॥

